Dhanesh
Sri Uttarakhand Kailas Himalayayatra
श्री उत्तराखण्ड कैलाश हिमालय यात्रा
Hindi
Paper—Printed (Book form)
2010 Sambat
47 Folio
4.9"x 7.2"
Complete

श्री उत्तराखण्ड कैलास हिमालय यात्रा



श्री वदरीनाथ जी

लेखक :—

धनेश

प्रकाशक :—

उत्तराखण्ड कैलास यात्रा प्रमण्डल

ऋषिकेश (देहरादून)

संवत् २०१०]

[मूल्य बारह आना

विषय सूची

सुरेशानन्द वीरशैव 'सिद्ध'
ऊखीमठ गढ़वाल यू०पी०
अगस्त १९५५

श्री उत्तराखण्ड कैलाश यात्रा

भ्रमण्डल द्वारा यात्रियों के

दर्शनीय स्थल

श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, देवप्रयाग, कैलाश, मानसरोवर, थोलिंगमठ (तिब्बत), सत्यपथ, चक्रतीर्थ, सहापथ, स्वर्गारोहण, लक्ष्मीवन, अलकापुरी तथा वैली ऑफ़-फ्लावर्स, हेमकुण्ड, लोकपाल, कल्पेश्वर, मदमहेश्वर प्रभृति और इसके अन्तर्गत समस्त छोटे बड़े प्रदर्शनीय स्थल।

प्राचीन काल से अबतक यातायात की असुविधा से भयत्रस्त होकर असंख्य धार्मिक जिज्ञासु एवं प्रकृति-पर्यवेक्षक लालायित दर्शनार्थी यात्रीगण, और पर्यटक, मार्ग की कठिनाई और अव्यवस्था से अनभिज्ञ होकर प्रायः निराश हो, चुप बैठ जाते थे। पवित्र, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक प्रवृत्ति के विकास को रोककर उदासीन हो जाते थे।

प्रत्येक भौतिक अथवा आध्यात्मिक विषय की सफलता के लिए अधिकांशतया प्रकृति के उपकरण विशेष सहायक होते हैं जो उक्त स्थलों में मूलभूत स्वतः सिद्ध हैं। इन विषयों के विभिन्न अंगों को ध्यान में रखते हुये हमने भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त

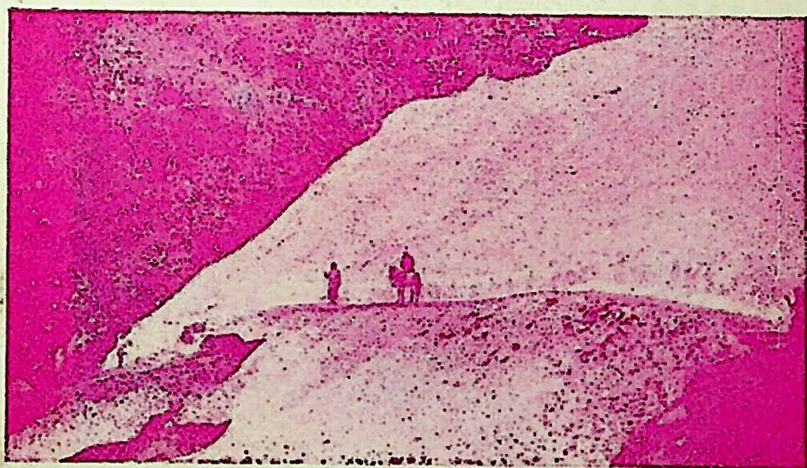
की नागरिक व ग्रामीण जनता का खूब अध्ययन किया और ... पारिवारिक सदस्यों से भी मिले। हमने व्यक्तिगत ... खण्डीय यात्रा के सम्बन्ध में लोगों से बातचीत की और उन के भाव जाने। किन्तु सब लोगों ने केवल एक ही कठिनाई बताई और वह है मार्ग की व्यवस्था सम्बन्धी असुविधा।

उक्त बातों को ध्यान में रखते हुये हमने श्री बद्रीशप्रभु की प्रेरणा से *"उत्तराखण्ड यात्रा प्रमण्डल"* का निर्माण कर इस योजना को आरम्भ किया। इसमें हमारा विश्वास है कि पूर्वोक्त स्थलों के दर्शनार्थी यात्रियों की सम्पूर्ण यात्रा सुगम और सुखमय सिद्ध हो, यही हमारी भावना है। अतएव निम्न प्रकार हम अपने संक्षिप्त उद्देश्य और विधेय प्रस्तुत करते हैं। जिसके द्वारा प्रत्येक जिज्ञासु व्यक्ति लाभ उठा सकता है।

हमारे प्रमण्डल का उद्देश्य है कि; भारतवर्ष के उत्तराखण्डीय स्थल जिन्हें अधिकांश लोग प्रबल इच्छा रखते हुए भी अभी तक नहीं देख पा रहे हैं। जिन महान् स्थलों में प्रकृति ने अपनी अनुपम छटा बिखेर कर अपने उपासकों को आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा भौतिक साधनों की निधि बनाकर सुरक्षित रखा है। उन स्थलों को जो अभी तक अज्ञातावस्था में पड़े हैं और शोधक जिज्ञासुओं की प्रतीक्षा में हैं। ऐसे अनेक रहस्यमय प्रकृति के भण्डारों का धर्म भावपूर्वक, प्रकृति-मण्डित यात्रा का निरीक्षण कराते हुए आनन्द दिलाकर यात्री को निज निवास-स्थान तक सुरक्षित पहुँचा देना है।



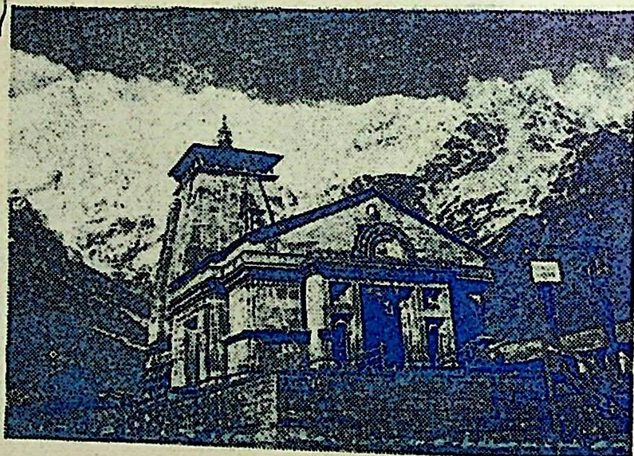
हिमाच्छादित मार्ग में चलते हुये हमारे यात्री



हिमाच्छादित मार्ग से हमारे घोड़े की सवारी



जोशीमठ मन्दिर



श्री केदारनाथ मन्दिर

(१) प्रत्येक उल्लिखित प्रेक्षणीय स्थल का आध्यात्मिक और भौतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से दिग्दर्शन कराना। (२) समस्त यात्रा के लिये पथ-प्रदर्शक नियुक्त करना। (३) स्थान व्यवस्था के साथ यात्रीकी मार्गोपयोगी सुरक्षा, भोजन, स्नान, स्थान दर्शन, सामान, इत्यादि का उचित प्रबन्ध करना। (४) प्रत्येक वस्तु जो यात्री अपने साथ उपयोग के लिये लाया हो उसे प्रतिदिन सुरक्षित रखते हुये वहाँ पहुँचाना जहाँ प्रमण्डल ने यात्री के लिये निवास स्थान का प्रबन्ध किया हो।

यात्रा के भाग

भाग [१] श्री बद्रीनाथ केदारनाथ यात्रा और उसके अन्तर्गत

ऋषिकेशः-भरतमन्दिर, पुष्करमन्दिर, त्रिवेणीघाट, *मुनीकीरेतीः*- डिवाइनलाइफ सोसाइटी, स्वामी शिवानन्दाश्रम, गीता भवन, *लक्ष्मणभूलाः*- लक्ष्मणमन्दिर, शत्रुघ्न मन्दिर *देवप्रयागः*-अलकनन्दा भागीरथी का मनोरम संगम, आद्यविश्वेश्वर, गंगा, यमुना का मूर्तिमय दर्शन, बिल्वेश्वर, टोन्डेश्वर, धनेश्वर, त्रिमूर्तिमय दर्शन, नृसिंहाचल, गृधाचल, दसरथाचल, कूटत्रय दर्शन, धामक कृयादि। *श्रीनगरः*- श्रीयंत्र, नारदमोहस्थल, कमलेश्वर महादेव, *रुद्रप्रयागः*- मन्दाकिनी, अलकनन्दा का संगम, रुद्रेश्वर दर्शन, अगस्त्यमुनी आश्रम

दर्शन। *गुप्तकाशीः*-विश्वेश्वर भगवान् शंकर के दर्शन, स्नान धार्मिक कृत्य। *नारायण चट्टीः*-प्राचीन कालीन मूर्तियां, शिलालेख। *त्रियुगीनारायणः*-त्रिकाल प्रज्वलित धुनी, स्नान, दर्शन, धार्मिक कृत्य, *गौरीकुण्डः*-उष्णधारा स्नान, दर्शन, छिन्नशिरगणपति दर्शन, *श्रीकेदारनाथः*-दर्शन, स्नान, धार्मिक कृत्य। केदारनाथ से वापिस *ऊखीमठः*-उषामाता का दर्शन। *तुंगनाथः*-श्रीमहेश भगवान् शंकर की मूर्तिमय दर्शन। *गोपेश्वरः*-वैतरणी स्नान, दर्शन। विरही गंगा, *गरुड़गंगाः*-पाताल गंगा, *जोशीमठः*-नृसिंहधारा, दर्शन, स्वामी शङ्कराचार्य का स्थान—ज्योतिष्पीठ। *विष्णुप्रयागः*-विष्णु-गंगा, अलकनन्दा का रौद्र संगम। *पाण्डुकेश्वरः*-पञ्चपाण्डव दर्शन, हनुमानाश्रम, क्षीरगंगा, कंचनगंगा, गंधमादन पर्वत, नरनारायण पर्वत, ऋषीगंगा। *श्रीबद्रीनाथ पुरी के अन्तर्गतः*-तप्तकुण्ड स्नान, पञ्चतीर्थ, ब्रह्मकपाल, भगवान् बद्रीश पञ्चायत व लक्ष्मी आदि अनेक दर्शन, धार्मिक कृत्य। *पुरी के समीपः*-नीलकण्ठ, सुनारमूली, कुबेर पर्वत, चतुर्वेदधारा, इन्द्रधारा, मातामूर्ति, शेषनेत्र, पञ्चशिला, चरणपादुका इत्यादि समस्त छोटे बड़े स्थान। वापिस होते समय *नन्दप्रयागः*-नन्दाकिनी अलकनन्दा का मनोहर संगम, *कर्णप्रयागः*-कर्णगंगा (पिण्डर) का संगम, राजा कर्ण व अनसूया माता का दर्शन करके वापिस ऋषिकेश या कोटद्वार रेलवे स्टेशन तक।

भाग [२] गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ यात्रा और उसके अन्तर्गत

ऋषिकेश, लक्ष्मणझूला, शिवानन्दाश्रम, स्वर्गाश्रम आदि के

दर्शनों के पश्चात् मोटर द्वारा, नरेन्द्रनगर होकर टिहरी, धरासू तक। उत्तरकाशी में अनेकानेक विद्वान् तपस्वी सन्तों के दर्शन, गंगनाणी होते हुये *यमुनोत्री* स्नान दर्शन। वापिस उसी मार्ग से गंगनाणी चट्टी होकर ऋषिकुण्ड, हरसिल, गंगोत्री। यहाँ से पवांली, कांठा होकर *त्रियुगीनारायण* में पूर्व लिखित मार्ग भाग (१) से वापिस रेलवे स्टेशन तक।

भाग [३] केवल बद्रीनाथ यात्रा और उसके अन्तर्गत

ऋषिकेश, लक्ष्मणझूला, स्वर्गाश्रम, स्वामी रामतीर्थाश्रम, डिवाइन लाइफ सोसाइटी आदि अनेक दर्शनोपरान्त मोटर द्वारा देवप्रयाग, कीर्तिनगर, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, चमोली, पीपलकोटि तक। उसके आगे पैदल गरुड़गंगा, जोशीमठ, विष्णुप्रयाग, पाण्डुकेश्वर बद्रीनाथ। पूर्वलिखित भाग (१) के समस्त दर्शनीय स्थल, और वापिस रेलवे स्टेशन तक।

सर्वांगीण व्यवस्था ।

१. स्पेशल मोटर :—जहाँ-जहाँ मोटर हो।

२. पैदल मार्ग में :—सवारी के लिये—डंडी, कण्डी, घोड़ा। सामान के लिये कुली, खिच्चर। (प्रति यात्री के साथ २० सेर सामान फ्री जायगा)।

३. निवास स्थान :—निश्चित् प्रोग्राम के आधार पर पूर्व सुरक्षित।

४. भोजन :—दोनों समय नियम पूर्वक सुपाच्य, स्वच्छ, ताजा भोजन। तथा उपवास के समय फलाहार और प्रति पांचवे दिन विशेष भोजन। निश्चित समय पर दोनों टाइम चाय। एवं यात्री की इच्छानुसार, नित्यप्रति दूध व अन्य उपलब्ध वस्तुयें।

५. स्नान के लिये:—नित्यप्रति ठंडा व गरम जल और कपड़ा साफ करने की सुविधा।

६. औषधोपचार :—अस्वस्थ होने पर तुरन्त वैद्यकीय सहायता के लिये औषधियाँ हर समय साथ में होंगी।

७. पथ-प्रदर्शक :—प्रति ५ से ८ आदमियों के साथ १ पथ-प्रदर्शक (गाइड) होगा, जो मार्ग में साथ-साथ चलते हुये सहायता देगा।

८. डाक :— स्थान-स्थान पर निश्चित समय पर कुशल-पत्र व समाचार-पत्र प्राप्त होने के लिये व्यवस्था।

सर्वांगीण व्यवस्था-क्रम १ से ८ तक का कुल प्रवास व्यय प्रति व्यक्ति।

		रु०	प्रति यात्री
यात्रा भाग (१)	बद्रीनाथ, केदारनाथ	२५५)	„
„ „ (२)	गंगोत्री, यमनोत्री केदारनाथ, बद्रीनाथ	५४५)	„
यात्रा भाग (३)	केवल बद्रीनाथ	१५०)	प्रति यात्री
„ „	केवल केदारनाथ	१८०)	„
„ „ (४)	केवल गंगोत्री, यमुनोत्री	२१०)	„
„ „ (५)	लोकपाल, हेमकुण्ड वेली ऑफ फ्लावर्स	१८५)	„

सवारी (वाहन) संपूर्ण प्रवास में

प्रवासनाम	डंडी	कंडी	घोड़ा
केदारनाथ, बद्रीनाथ	४२०)	१६०)	१८५)
गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ	६००)	३५५)	३५०)
केवल बद्रीनाथ	२००)	१००)	१००)
फ्लावर्स वैली	२५०)	२००)	२००)

मार्ग व्यवस्था के लिये स्थायी कर्मचारी

प्रमण्डल ने उत्तराखण्ड हिमालय की यात्रा जाने वाले महानुभावों की सेवा के लिए मार्ग-व्यवस्था के हेतु निम्न प्रकार स्थायी कर्मचारी नियुक्त किये हैं और परिवहन के लिये, पैदल मार्ग के लिये डंडी, कंडी, घोड़ा आदि के साथ-साथ मोटर मार्ग में स्पेशल लौरी तथा कारमोटर की व्यवस्था की है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है :—

	संख्या
कुली बोझा सामान ले जाने के लिये	१००
खिच्चर ,, ,, ,,	३०
डण्डी सवारी के वाहक कुली	१००
कण्डी ,, ,, ,, ,,	३०
घोड़ा ,, ,, ,, ,,	२५
घोड़े खिच्चरों के साथ चलने वाले आदमी	४५
रसोई बनाने वाले	२५
पथ-प्रदर्शक (गाइड)	३५
सेवक वर्ग (अटैन्डैन्ट्स)	४८

इसके अतिरिक्त सुपरवाइजर और टूरिस्ट मैनेजर भी प्रत्येक पार्टी के साथ दिया जाता है और स्थान-स्थान में प्रमण्डल के स्थानीय एजेन्ट सेवा के लिये सदैव तत्पर रहते हैं।

———

भावी कार्य-क्रम

प्रमण्डल की आन्तरिक भावना उत्तराखण्ड हिमालय के दर्शनार्थी यात्रियों को हर प्रकार अधिक से अधिक सेवा द्वारा सुविधा पहुँचा कर विकट यात्रा को सुखमय और सुगम करना है। इसी हेतु सरकार से लिखापढ़ी हो रही है कि सरकार इस कार्य को प्रोत्साहन देने की कृपा करे ताकि अधिक से अधिक लोगों का ध्यान उत्तराखण्ड की ओर आकर्षित हो। प्रमण्डल की धारणा है कि:—

समस्त उत्तराखण्ड मार्ग में मुख्य-मुख्य स्थानों में आधुनिक ढंग के विशाल विश्रामगृह होंगे, जिनका निर्माण प्रमण्डल द्वारा किया जायेगा।

पैदल-मार्ग में प्रत्येक १० मील की दूरी पर प्रमण्डल अपने रैस्टहाउस (विश्रामगृह) जनसाधारण के उपभोग के लिये निर्माण करेगा और प्रत्येक स्थान में यात्री के लिये भोजनाच्छादन की सम्पूर्ण व्यवस्था होगी। देशकालानुकूल प्रत्येक विश्रामस्थल में तात्कालिक औषधोपचार साधन सामग्री होगी। मार्गोपयोगी वस्तु प्रत्येक स्थल में सर्वदा और सर्वथा सुलभ प्राप्य होगी। बिना किसी वस्तु के साथ लिये भी यदि कोई चाहे तो समस्त उत्तराखण्ड की यात्रा सुखपूर्वक पूर्ण कर सकेगा। प्रत्येक विश्रामगृह में उत्तराखण्ड हिमालय का ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा पौराणिक आधार से स्थान-वर्णन तथा नक्शे और मानचित्रादि सहित समस्त ज्ञातव्य साहित्य सामग्री रहेगी। हिमाच्छादित मार्ग और उच्चशिखरों पर

चढ़ने के लिये तथा निर्जन स्थलों में जाने के हेतु सम्पूर्ण साधन सामग्री और गाइड (मार्गदर्शक) प्रत्येक स्थान में सेवा के लिये तत्पर रहेंगे।

वर्तमान समय में प्रमण्डल ने समस्त उत्तराखण्डीय मार्ग में अपने अस्थायी विश्रामगृह सुरक्षित किये हुए हैं। किन्तु इससे प्रमण्डल को सन्तोष नहीं है। चूँकि यह विश्रामगृह जनसाधारण के निवास स्थान के ही समान हैं। यद्यपि यह अनुभवसिद्ध है कि अप्रैल, मई, जून मास में जब उत्तराखण्ड यात्रा जाने वाले यात्रियों की अधिक भीड़ होती है तब उस दिशा में हमारे पूर्व सुरक्षित स्थानों में अन्य यात्रीगण भी आश्रय पाते हैं। चूँकि उस समय चट्टियों में सर्वत्र स्थानाभाव रहता है। भविष्य में हमारा निश्चय है कि यह सब असुविधाएँ दूर की जायेंगी।

पैदल मार्ग चलने में नियम पालन

तपोभूमि भूस्वर्ग उत्तराखण्ड कैलाश की यात्रा करते हुए सर्वप्रथम सर्वदा निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखते हुए पैदल मार्ग चलना चाहिये।

पर्वतीय यात्रा में प्रायः पैदल चलना होता है और वास्तविक प्राकृतिक आनन्द पैदल यात्रा में ही मिलता है। अतएव शारीरिक और मानसिक पुष्टि के लिये सर्वप्रथम नियम और संयम का पालन करना आवश्यक है।

पैदल चलते समय यात्रियों को पग-पग पर प्राकृतिक दृश्यों की अनुपम और मनोहर दर्शनीय छटायें दृष्टिगोचर होती रहती

हैं। कहीं कहीं पर हिमाच्छादित पर्वतश्रेणियों से गिरते हुए मनोरम झरनों की शोभा और सघन देवदारु आदि वृक्षों की पंक्तियाँ, मार्ग के समीप दिखाई देती हैं। प्रायः यात्री स्वभावतया इन मनोहर दृश्यों के दर्शनानन्द में विभोर हो जाते हैं जिस कारण चलते हुये मार्ग में ठोकर खाकर गिर जाने का अन्देशा बना रहता है। अतएव जहाँ कहीं, जब कभी पर्वतीय दृश्यों का प्राकृतिक अध्ययन कर आनन्द लेना हो या गवेषणा करनी हो तो, स्वस्थचित्त होकर कुछ क्षण मार्ग में विश्राम करते हुए देखना उचित और हितकर होता है। जब भी मार्ग में चलें तो चित्तवृत्ति और दृष्टि एकाग्र करके ध्यानपूर्वक ही मार्ग में चलें। सामने से आने जाने वाले घोड़ा, खिच्चर, डंडी आदि के समीप आने पर सदैव पहाड़ की ओर खड़ा होना चाहिये ताकि क्रौस करते समय धक्का लगने के खतरे से सुरक्षा हो सके।

प्रतिदिन एकबार ही स्नान करना हितकर होता है। चलते चलते जल नहीं पीना चाहिये। यदि जल पीना हो तो पहिले मोटे कपड़े से उसे छानकर कुछ देर रख देना चाहिये और बाद में कुछ थोड़ा सा मिश्री और कालीमिर्च खाकर जल पीना हितकर होता है। खाली पेट पानी हानि करता है। मार्ग चलते-चलते दूध नहीं पीना चाहिये। यदि दूध पीना हो तो रात्रि में सोते समय पीना चाहिये।

नित्यप्रति ५ बजे प्रातः प्रस्थान कर ११ बजे विश्राम करके भोजन करना और पुनः ४ बजे चलकर ६ या ७ बजे तक प्रतिदिन

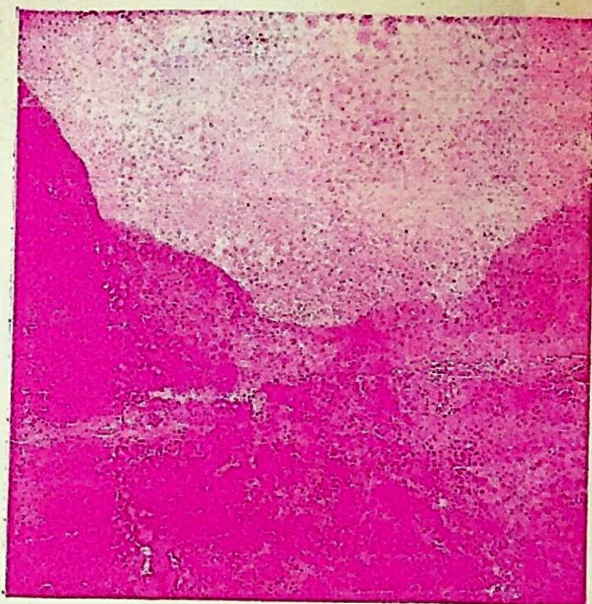
का प्रवास पूर्ण करना चाहिये। सदैव ताजा भोजन खाना और मक्खियों से सावधान रहना चाहिये। दुकानों में बनी हुई मिठाइयों से परहेज करना और कच्चा पक्का भोजन नहीं खाना चाहिये। अपरिचित व्यक्ति की दी हुई किसी भी वस्तु को नहीं खाना चाहिये। कहीं पर भी बहते झरनों का जल न पीयें। यही नियम सर्व प्रथम स्वास्थ्य की रक्षा करेंगे।

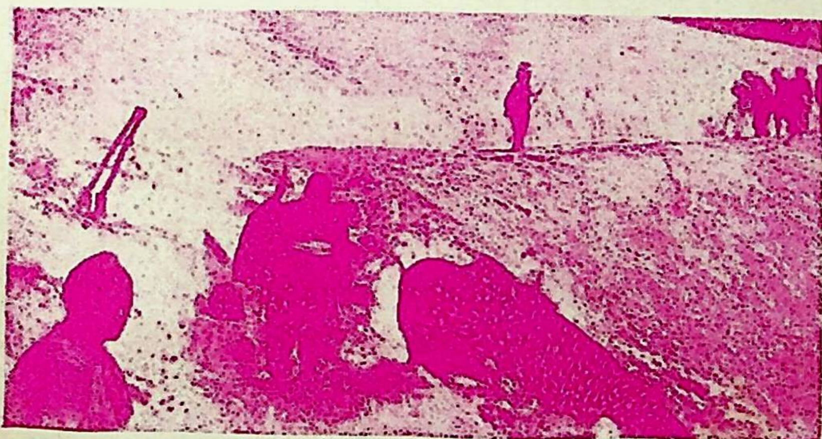
ऐतिहासिक परिचय

उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीनकाल में गढ़वाल के समस्त मठ मन्दिरों का प्रबन्ध यहाँ के राजाओं द्वारा होता था। विशेषतया उत्तराखण्ड में चार धाम—यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ ही माने जाते हैं। आज भी इन स्थलों में इन नरेशों की धार्मिक प्रतिष्ठा सुरक्षित है। प्राचीनकाल में इसका प्रबन्ध चाँदपुर गढ़ी से होता था और उसके बाद श्रीनगर से तथा इसके बाद टिहरी नरेश के द्वारा होता था। किन्तु अब बद्रीनाथ केदारनाथ मन्दिर की व्यवस्था के लिये यू०पी० सरकार द्वारा एक ट्रस्ट बनाया गया है जिसमें सरकारी तथा गैर सरकारी सदस्य हैं। किन्तु इसमें आज भी २ सदस्य टिहरी नरेश की स्वीकृति पर नियुक्त किये जाते हैं। गढ़वाल के बहुत से गूँटगाँव (मन्दिर की पूजा खर्च के लिये) इन मन्दिरों में अर्पित किये गये हैं।

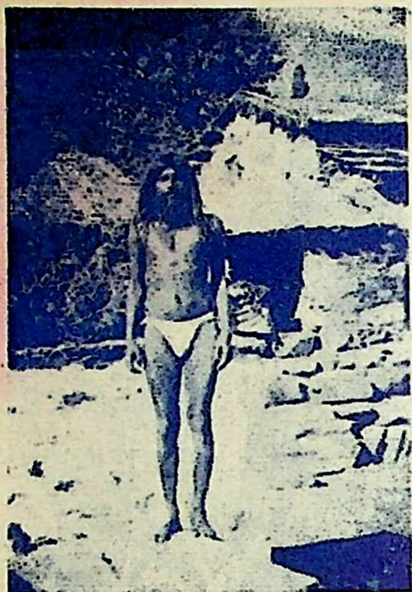
आज कल, जब भगवान् बदरीविशाल और केदारनाथ जी के दर्शन-कपाट बंद हो जाते हैं, तो शीतकालीन पूजा बद्रीनाथ

स्वर्गारोहण बाँक (ग्लेसियर)

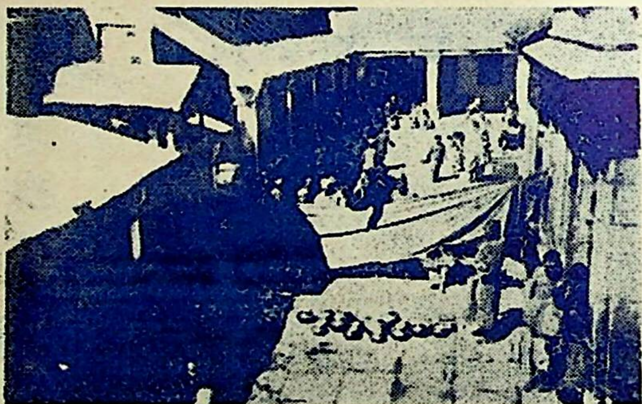




हिमाच्छादित मार्ग पर चलते हुये हमारे यात्रीगण



श्री अवधूत परमानन्द जी उत्तराखण्ड के हिमाच्छादित शिखरों में सदैव अनावृत्त विचरण करते हैं।



श्री बदरीनाथ मन्दिर 'भोग' दर्शन

की जोशीमठ से और केदारनाथ की ऊखीमठ से होती है। प्राचीनकाल में आदि बदरी और टिहरी से ही शीतकालीन पूजा होती थी। यहाँ पर बद्रीनाथ जी और केदारनाथ जी की मूर्तियां और मन्दिर बने हुए हैं। गढ़वाल के सामन्तों के अधीन अल्मोड़ा भी था और तब से ही अल्मोड़ा के कुछ गाँव भी गूँट गाँव के रूप में आज भी मन्दिर बद्रीनाथ के अर्पण हैं।

प्राचीनकाल से यह माना गया है कि संसार में जहाँ कहीं भी कोई स्थान ख्याति प्राप्त हैं, उनमें कोई न कोई विशेषता अवश्य है। सभी जातियों के विभिन्न दृष्टिकोणों से जो स्थल सर्वोत्तम और पवित्र माने गये, उन्हें तीर्थ स्थान का रूप दिया गया। तीर्थ शब्द के यद्यपि कई अर्थ होते हैं; जैसेः—आसमान में उड़ने वाली वस्तु, जल में तैरने वाली नौका, चरणोदक आदि। किन्तु वास्तविक अर्थ इस दशा में प्रतीत होता है किः—जहाँ, जिस स्थान में जाकर मनुष्य अपने किये हुए दुष्कर्मों का प्रायश्चित करता है उस स्थान को तीर्थ कहते हैं। प्रत्येक तीर्थ स्थान विभिन्न जातियों के धर्मप्रवर्तकों द्वारा उनके जीवन की पुण्य स्मृति में अवश्य सेव्यमान रहा और पौराणिक अथवा ऐतिहासिक दृष्टि से इसका मूल विवेचन हम पौराणिक आधार ही मान सकते हैं क्योंकि अधिकांश तीर्थ पौराणिक अवतारों के आधार पर ही संस्थापित कहे गये हैं।

भारतवर्ष में जितने भी तीर्थ हैं, वे सब धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक, भौतिक

गुण तथा सौन्दर्य विशेष वाले, शुद्ध वातावरण संयुक्त, स्थान ही महान् विचार और संशोधन द्वारा माने गये हैं। यह निर्विवाद सिद्ध है कि इन स्थानों में जाकर मानव को आध्यात्मिक शान्ति संवर्धन के साथ भौतिक उपलब्धि भी प्राप्त होती है।

जहाँ तक उक्त वातावरण की उपलब्धि का प्रश्न है, वह समस्त भारतवर्ष के अन्य तीर्थ, आश्रम और धामों से विशेष कर उत्तराखण्ड हिमालय के पग-पग पर अनुभूति द्वारा प्राप्त हो सकती है। इसके सम्बन्ध में पद्मपुराण के अन्तर्गत केदारखण्ड, वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि महान् ग्रन्थों में महत्वपूर्ण आख्यान, भगवान् वेदव्यास, आदि कवि वाल्मीकि ने मुक्त कंठ से वर्णन किये हैं।

आदिकाल से ही यह उत्तराखण्ड भूमि तपोभूमि मानी गई है। तप के तात्पर्य योग से ही नहीं, अथवा साधुओं से ही नहीं, अपितु समस्त विश्व में जितनी भी वस्तुयें हैं सब तप द्वारा ही प्राप्त होती हैं। अतएव प्रत्येक कर्म की आरंभावस्था का नाम तप है। उत्तराखण्ड भूमि में हमारे ऋषि, महर्षि, साधु, सन्त, सर्वदा विराजमान रहते हैं इसीलिये इसकी पवित्रता और पूज्यता बढ़ती आई है और भविष्य में भी बढ़ती रहेगी। इस उत्तराखण्ड को सदैव भूस्वर्ग माना गया है। केदारखण्ड में लिखा है कि—

गंगाद्वारोत्तरं विप्रस्वर्ग भूमि स्मृता बुधैः ।
अन्यत्र पृथ्वी प्रोक्ता गंगाद्वारोत्तरं विना ॥
इदमेव महाभाग स्वर्गद्वारं स्मृतं बुधैः ।
(के०अ० १०६, श्लोक ४)

गंगाद्वार से तात्पर्य है हरिद्वार अर्थात् हरिद्वार से उत्तर दिशा की भूमि को विद्वानों ने स्वर्गभूमि कहा है। इसके अतिरिक्त भूमि पृथ्वी कहलाती है और इसी स्थान हरिद्वार को विद्वान् लोगों ने स्वर्गद्वार कहा है।

इसी प्रकार श्रुति-स्मृति परम्परा के आधार पर यदि विश्वास करते हैं तो हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि जैसे एक स्थल पर भगवान् शंकर और पार्वती का संवाद आता है :—

धन्याः कलयुगे घोरे ये नरा बदरी गताः ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा हरिभक्तिरताः प्रियेः ॥
गंधमादन बदरी नरनारायणाश्रम ।
कुबेरादि शिला रम्ये नाना तीर्थ विराजितः ॥
(के० ५७ अ० ३-२० श्लोक)

हे पार्वती ! कलियुग में वे मनुष्य धन्य हैं जो बदरीकाश्रम जाते हैं। क्योंकि जिस बदरीकाश्रम में ब्रह्मा आदि देवता हरि-भक्ति में तत्पर रहते हैं, जहां गंधमादन पर्वत, बदरीवन, नरनारायणाश्रम, कुबेर, वराह, नरसिंह, मार्कण्डेय, नारदादि रम्य शिलायें हैं। जहां अनेक तीर्थ प्राणीमात्र के कल्याण के लिये विराजमान हैं। ऐसे बदरीकाश्रम में जाने वाले धन्य हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीमद्भागवत् में उत्तराखण्ड की हृदय स्पर्शी आध्यात्मिक गाथा गाई गई है।

योऽवतीर्यान्त्मनोऽशेन दाक्षायण्यान्तु धर्मतः ।
लोकानां स्वस्तयेऽध्यास्ते तपो बदरीकाश्रमे ॥

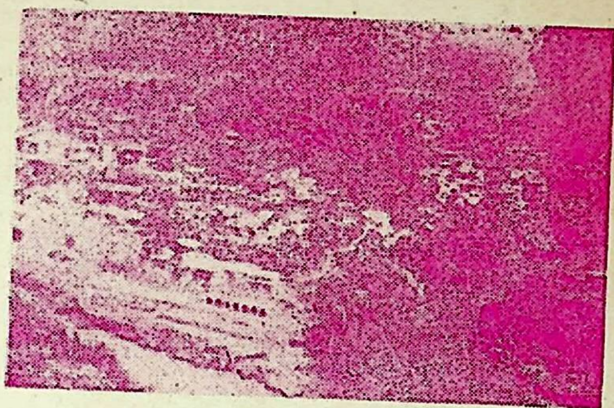
स्वयं भगवान् जहां आत्मांश द्वारा लोक कल्याणार्थ निरन्तर तपश्चर्या में लीन हुए हैं, ऐसा स्थान केवल बदरिकाश्रम है।

पाण्डवकाल में कुरुक्षेत्र युद्ध समाप्ति के पश्चात् जब समस्त यदुवंशी परस्पर युद्ध में समाप्त हो चुके थे, तब प्रभासक्षेत्र (द्वारिका पुरी के समीप) भगवान् श्रीकृष्ण अपने ज्ञानी शिष्य एवं मन्त्री को अन्तिम उपदेश देते हुये कहते हैं:—

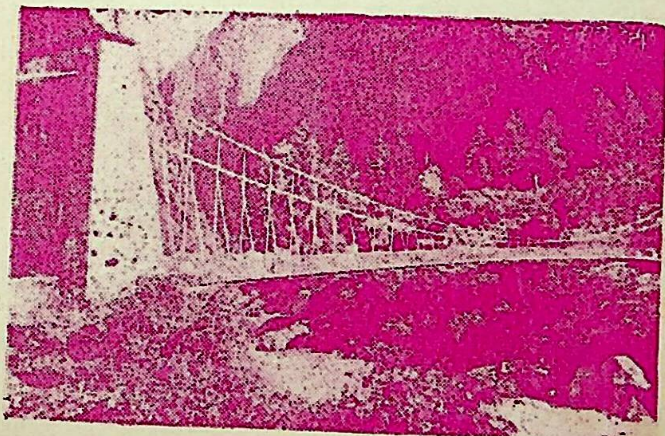
"गच्छोद्धव मयादृष्टं बदर्याख्यं ममाश्रमम्" हे उद्धव! जाओ, अब हमारा और तुम्हारा कार्यकाल समाप्त होने वाला है। अतएव जहां मैंने स्वतः तपश्चर्या द्वारा आत्मशान्ति के लिये अनुभूति द्वारा सेवन किया और जो लोककल्याण की दृष्टि से परम पवित्र स्थान है, ऐसे स्थान बदरिकाश्रम में जाकर आत्म-शान्ति प्राप्त करो।

देवप्रयाग

ऋषिकेश के पश्चात् सम्पूर्ण उत्तराखण्ड का प्रवास प्रत्येक यात्री को पर्वतीय मार्गों में मोटर और पैदल से तय करना है। सर्वप्रथम मोटर द्वारा ऋषिकेश से देवप्रयाग ४३ मील पर प्रथम विश्राम होता है। यह स्थान प्राकृतिक और भौतिक दृष्टि से समस्त उत्तराखण्ड में अपने ढंग का अद्वितीय है। यहाँ पर,



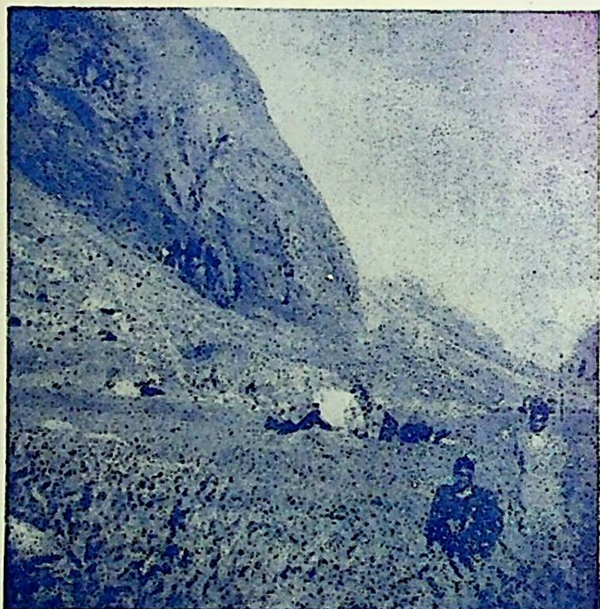
संगम घाट, देवप्रयाग



लक्ष्मण झूला



ब्रह्म कुण्ड हरि की पैड़ी



लक्ष्मीवन

श्री रघुनाथकीर्ति महाविद्यालय गढ़वाल में सब से प्राचीन है। मुख्यतया अलकनन्दा, भागीरथी का संगम दर्शनीय है। संगम-घाट पहिले बड़ा भयावह था, जिससे प्रतिवर्ष गंगा में कई एक मनुष्य बह जाते थे। किन्तु श्री रामप्रसाद गिरजाशङ्कर कोटियाल के उपदेश से सन् १६४१ में श्रीमान् सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता पोर बन्दर बम्बई निवासी ने इस संगमघाट को सुचारु रूप से पहाड़ की भयानक चट्टानों को कटवाकर लगभग ३ लाख रुपये खर्च करके सुखावह बनाया। इस महान् पवित्र कार्य के लिये सेठ नानजी भाई समस्त भारतीय यात्रियों के धन्यवाद के पात्र हैं। सन् १६५३ में श्री सेठ जी पुनः अपनी इस पूर्वकृति का अवलोकन करने के लिये देवप्रयाग पधारे और इस समय भी वहाँ पर उन्होंने हायर सेकण्ड्री पाठशाला में छात्रावास की कमी को पूरा किया। छात्रावास भवन निर्माण में लगभग ५० हजार रुपये का व्यय होगा। इसी प्रकार सार्वजनिकता की ओर भारतवासियों का ध्यान आकर्षित होने की हमें आशा है।

देवप्रयाग से ही अलकनन्दा और भागीरथी ने मिलकर गंगा का रूप धारण किया है। संगम से ऊपर चलकर श्री रघुनाथ जी, आद्यविश्वेश्वर, गंगा यमुना की साकार मूर्तियाँ एवं गृद्धाचल, नरसिंहाचल, दशरथाचल नामक त्रिकूट और प्राचीन वैदिक काल में श्री सुदर्शन क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ सृष्टि के शैशवकाल में ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण के लिये तपस्या की थी। प्राचीनकाल से इसे बीजमन्त्रों की उत्पत्ति का स्थान माना गया है और

गंगोत्पत्ति के कारण यह भारत में पितरों का मोक्षस्थल माना गया है। इसका अस्तित्व आज भी पिण्डदानादि द्वारा यात्रियों की भावनाओं में देखा जाता है।

केदारनाथ

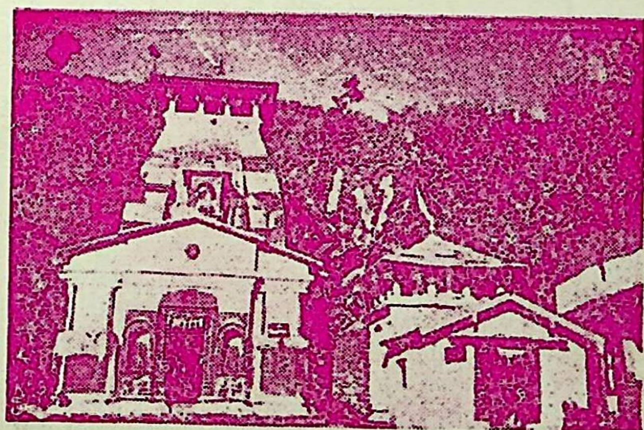
पौराणिक दृष्टि के आधार पर श्री केदारनाथ मन्दिर पाण्डव काल का बना हुआ है। शिवशङ्कर 'लिङ्ग' के विषय में गाथा इस प्रकार है कि वहाँ पर शङ्कर भगवान् के महिष के रूप का पृष्टभाग है और इसी को पञ्च केदारों में प्रथम केदार कहते हैं। द्वितीय केदार मध्यमहेश्वर में नाभिभाग, तृतीय केदार तुंगनाथ में बाहु, चतुर्थ केदार रुद्रनाथ में मुख, पञ्चम केदार कल्पेश्वर में जटा और पशुपतिनाथ नैपाल में शिर माना जाता है। मन्दिर में उषा, अनिरुद्ध, पञ्चपाण्डव, श्रीकृष्ण भगवान और शिवपार्वती की मूर्तियाँ विराजमान हैं। मन्दिर के बाहर परिक्रमा के समीप अमृतकुण्ड, ईशानकुण्ड, हंसकुण्ड, रेतसकुण्ड आदि पवित्र तीर्थ हैं। केदारनाथ से १० मील पर वासुकी ताल अत्यन्त रमणीक और दर्शनीय है, किन्तु मार्ग में बड़ी कठिनाई है, सड़क नहीं है और न कहीं विश्राम स्थल ही है।

ऊषामठ (ऊखीमठ)

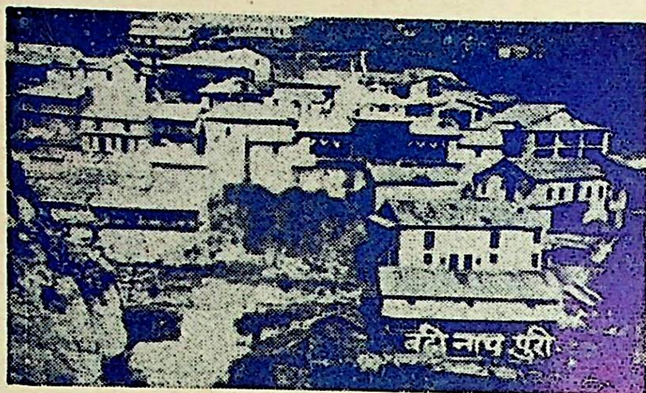
इसी स्थान में वाणासुर सुता ऊषा ने पार्वती से विद्या प्राप्त की थी। यही वाणासुर की राजधानी थी। आज भी इसके नाम से 'वामसु' गाँव और पट्टी विख्यात है। मन्दिर की शोभा दर्शनीय है। केदारनाथ की शीतकालीन पूजा यहीं से होती है। मन्दिर के



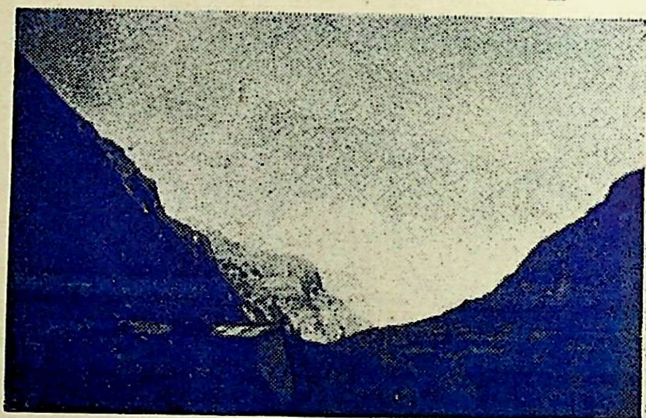
रुद्रप्रयाग संगम



विश्वनाथ मन्दिर, गुप्तकाशी



वदरीनाथ पुरी



वदरीनाथ नीलकण्ठ घाटी

भीतर श्री बदरीनाथ, तुंगनाथ, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, ऊषा, अनिरुद्ध, राजर्षि मान्धाता, सत्य, द्वापर और त्रेता युगों की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

तुंगनाथ

उत्तराखण्ड की चारों धाम यात्रा गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ जाते हुये जनसाधारण के लिये सुलभ है। इस यात्रा में तुंगनाथ शिखर ही प्राय सर्वोन्नत यात्री को मिलता है। इसी शिखर से पूरब की ओर नन्दादेवी, पञ्चाचूली, द्रोणाचल की श्रेणियों के दर्शन होते हैं। उत्तर की ओर गंगोत्री, यमुनोत्री, केदार, चौखम्बा, बद्रीनाथ, रुद्रनाथ के हिमाच्छादित शिखरों की शोभा दिखाई देती है। दक्षिण की ओर पौड़ी का दृश्य, चन्द्रवदनी पर्वत सुरखण्डा देवी आदि दिखाई देते हैं। मन्दिर में काले पाषाण की मूर्तियां और शिवलिङ्ग हैं।

गोपेश्वर

महादेव मन्दिर, परशुराम का परशा और अष्टधातुनिमित त्रिशूल तथा विशाल मन्दिर दर्शनीय हैं। यहाँ पर वैतरणी गंगा की धारा भी है।

—

❀ केदारनाथ-बद्रीनाथ यात्रा मार्ग ❀

मोटर का रास्ता जाते समय

	मील	फर०
ऋषिकेश		
देवप्रयाग	४२	०
कीर्तिनगर	२१	०
श्रीनगर	३	०
रुद्रप्रयाग	२२	०
	८८	०

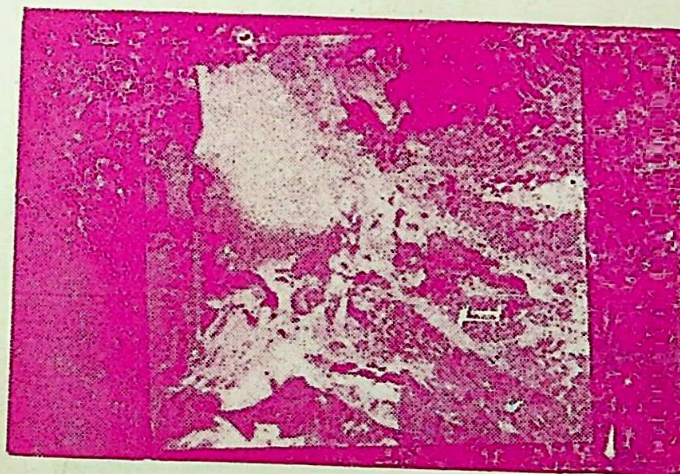
पैदल यात्रा मार्ग

	मी०	फर०
रुद्रप्रयाग		
छतौली	३	०
तिलवारा	१	०
रामपुर	३	४
सोरगड	२	४
अगस्तमुनी	१	४
छोटा नारायण	०	४
सौडी	१	४
चन्द्रापुरी	२	०
भीरी चट्टी	३	०
कुण्ड चट्टी	२	४
गुप्तकाशी	२	४

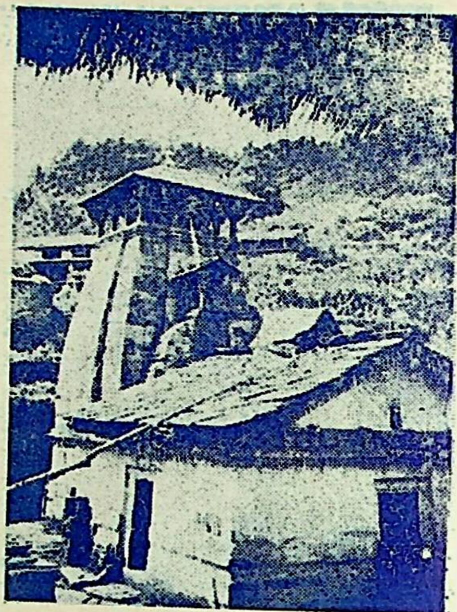
नाला चट्टी	१	४
मातादेवी	१	०
नारायणकोटी (भेत्ता)	१	०
व्युंग चट्टी	१	०
मैखण्डा (झूला)	२	४
फांटा	२	४
रामपुर	३	०
पाटागड	१	४
{ त्रियुगी नारायण	३	० }
{ सोन प्रयाग	३	४ }
सोनप्रयाग	०	४
गौरीकुण्ड	३	०
आराम चट्टी	१	०
जंगल चट्टी	१	४
रामबाड़ा	१	२
केदारनाथ	३	२
	४८	०

केदारनाथ से वापिस

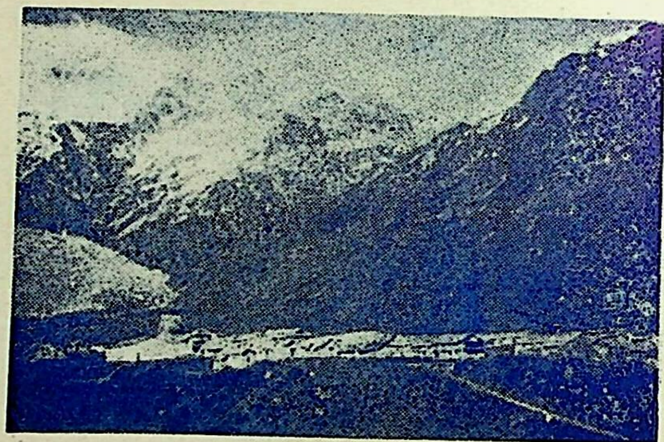
	मी०	फर०
रामबाड़ा	३	२



सरस्वती गङ्गा के भीषण प्रपात-तट पर स्वामी अवधूत जी आराधना करते हुये ।



त्रियुगीनारायण मन्दिर



केदारनाथ का विहंगम दृश्य

नाम चट्टी		मील	फर०
रामपुर		८	६
नारायण कोटी (भेंत्ता)		६	०
नालाचट्टी तक पूर्वत मार्ग		२	०
ऊखीमठ		३	०
गणेश चट्टी		३	०
ग्वालियाबगड़		२	०
देहडा		१	२
गोकुल		१	२
पोथीबासा		१	०
दुगल चट्टी		०	४
बनियाकुण्ड		१	४
चौपत्ता		१	४
तुंगनाथ		३	०
भीम चट्टी		३	०
जंगल चट्टी		१	०
पांगार बासा		२	४
मण्डल चट्टी		३	०
गोपेश्वर		४	०
चमोली	मोटर	४	०
मठ चट्टी	मोटर	२	०
छिनका	मोटर	१	४
सियासैन	मोटर	३	०
हाट चट्टी	मोटर	१	०
पीपलकोटी	मोटर	२	०
गरुड़गंगा		३	४
टंगणी		१	४
पातालगंगा		३	०
गुलाबकोटी		२	०
कुम्हार चट्टी (हेलंग)		२	०
खनोटी		२	२
भड़कुला		१	४
सिंगधारा		३	०
जोशीमठ		०	४
विष्णुप्रयाग		२	०
बलदोरा		१	०
घाट चट्टी		३	०
पाण्डुकेश्वर		२	०
शेषधारा		१	०
लाम बगड़		२	०
हनुमान चट्टी		३	२
बदरीनाथ		५	०
		१०२	०

लौटते समय मोटर का मार्ग

	मी०	फर०
पीपलकोटी		
रुद्रप्रयाग	५१	०
श्रीनगर से	२२	०
ऋषिकेश	६६	०
(या) पौड़ी	१६	०
कोटद्वार	६६	०
	१४८	०

गंगोत्री यमुनोत्री यात्रा मार्ग वर्णन

गंगोत्री यमुनोत्री जाने वाले यात्री दो मार्गों से जाते हैं।

१—ऋषीकेश से मोटरद्वारा नरेन्द्रनगर - टेहरी होकर धरासू तक और इसके बाद पैदल।

२—ऋषीकेश से मोटर द्वारा देवप्रयाग और देवप्रयाग से पैदल ३४ मील टेहरी तक। टेहरी से २६½ मील धरासू तक मोटर द्वारा और पुनः पैदल मार्ग प्रारम्भ होता है।

प्रायः धार्मिक दृष्टि से यह यात्रा देवप्रयाग होकर ही करनी उचित है। क्योंकि देवप्रयाग में अलकनन्दा-भागीरथी का संगम स्नान और धार्मिक कृत्य करना धार्मिक दृष्टि से यात्रा का प्रथम और प्रधान कर्म माना जाता है।

देवप्रयाग से टेहरी मार्ग पैदल ३४ मील

नाम चट्टी	*मीलों की दूरी*	*नाम चट्टी*	*मीलों की दूरी*
मुंडेठ	३	बराडूया	६
खरसाड़ा (तैल)	७	क्यारी	८
कोटेश्वर	४	टेहरी	६
(कोटेश्वर महादेव दर्शन)			

ऋषीकेश से नरेन्द्रनगर होकर टेहरी मोटर द्वारा ४४ मील है। टेहरी से मोटर द्वारा धरासू २६½ मील है। यहां से पैदल यात्रा आरंभ होती है। धरासू से यमुनोत्री ४८ मील है।

धरासू	२६½	डंडालगाँव	२
कल्याणी	४	सिमली	१
गेंऊल	५	यमुनोत्री से लौट कर यहां से ही उत्तरकाशी को मार्ग जाता है।	
सिलक्यारी	५		
राड़ी	५		
गंगनानी	२		

जगरनाथ चट्टी ... (गंगा नयन कुण्ड)

(कुथगौरगाँव)	५	खरसाली	४
यमुना चट्टी	१	यहां से १ मील यमुना पार वीफगाँव (मार्कण्डेय तीर्थ) और उष्ण-जल प्रवाह है।	
ओजरी	२		
डंडोटी	२½		
हनुमान चट्टी	४		

यमुनोत्री ५ ... यमुना मन्दिर तथा अनेक उष्ण कुण्ड हैं, जिनमें चावल पक जाते हैं।

यमुनोत्री से गंगोत्री मार्ग पैदल ६६ मील

जाते हुए मार्ग से ही वापिस २५ मील लौटकर सिमली तक आना पड़ता है।

नाम चट्टी	*मीलों की दूरी*		
यमुनोत्री से सिमली	२५	नकोरी	३½
सिंगोट	७½	यहां पर सड़क धरासू-उत्तरकाशी सड़क से मिलती है।	

डुंडा	३	
उत्तरकाशी	६	.... यहाँ अनेकानेक विद्वान् सत्पुरुषों के दर्शन होते हैं।
गंगोरी	३	.... यहां पर डोटीताल से निकली हुई असी गंगा का संगम है। एक रास्ता डोटीताल को जाता है। डोटीताल दर्शनीय स्थान है, यहां से १८ मील की दूरी पर है, और मार्ग व्यवस्था सुगम है।
मनेरी	७	
मल्ला	२	.... गंगोत्री से वापिस होकर यहां से मार्ग केदारनाथ को जाता है।
भटवाड़ी	२	... इस स्थान को भास्कर प्रयाग कहते हैं।
सुक्खी	६	झाला ३
गंगनानी	३	हरसिल $2\frac{1}{2}$
लोहारीनाग	४	इस स्थान को हरिप्रयाग कहते हैं।
सुक्खी	५	यहां ऊनी माल अच्छा मिलता है।

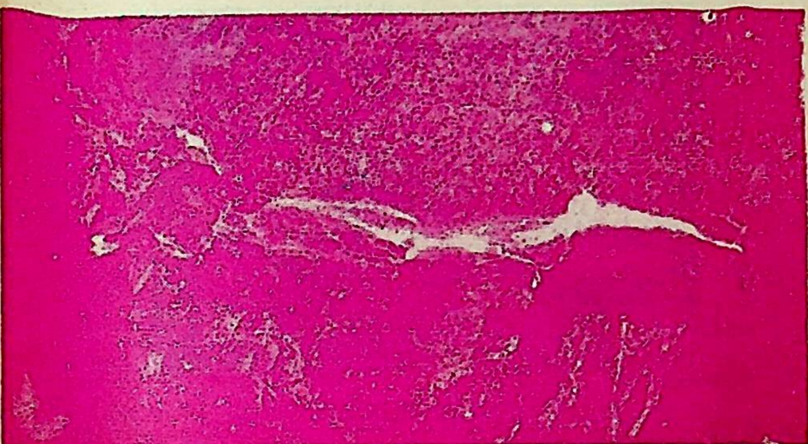
धराली	२	.... (श्यामप्रयाग) भागीरथी-श्याम-गंगा का संगम है। सामने राजा भागीरथ का तपस्या स्थान श्रीकंठ पर्वत है। नेलंग घाटी की व्यापारिक मंडी है।
जांगला	४	... यहां से $1\frac{1}{2}$ मील पर नेलंगघाटी को रास्ता जाता जाता है।
भैरोंघाटी	$2\frac{1}{2}$	
गंगोत्री	$6\frac{1}{2}$	.... प्राचीन मन्दिर दर्शन, भागीरथी स्नानादि।
गोमुख	१८	... मार्ग प्राकृतिक है, बीच में एक पड़ाव है, ग्लेशियर अधिक हैं, भागीरथी का उद्गम स्थान है।

गंगोत्री केदारनाथ मार्ग पैदल १२१ मील

गंगोत्री से वापिस उसी मार्ग से ४० मील मल्ला चट्टी तक आना पड़ता है।

नाम चट्टी	मीलों की दूरी	नाम चट्टी	मीलों की दूरी
गंगोत्री से मल्लाचट्टी	४०	भौटं चट्टी	३
सोरा की गाड	३	घुत्तू ,,	८
फ़्यालू	३	गोपाल ,,	१½
छूणाचट्टी	३	दुफन्दा ,,	४½
बेलक	४	फन ,,	२
पंगराणा	५	पँवाली ,,	१
झाला	४	मग्गू ,,	६
बूढ़ा केदार	५	त्रियुगीनारायण	५
भैरव चट्टी	६	केदारनाथ	१३½

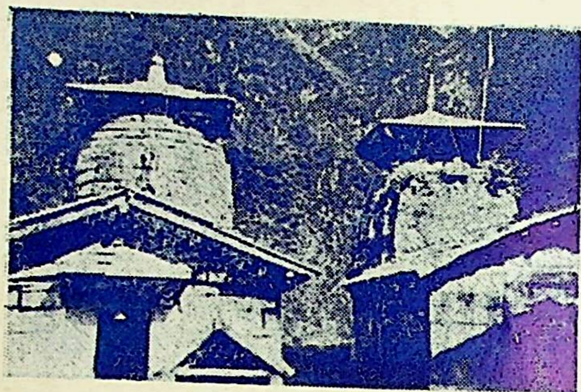
केदारनाथ से बदरीनाथ १०१ मील। इसका मार्ग वर्णन केदारनाथ - बद्रीनाथ मार्ग वर्णन में देखिये।



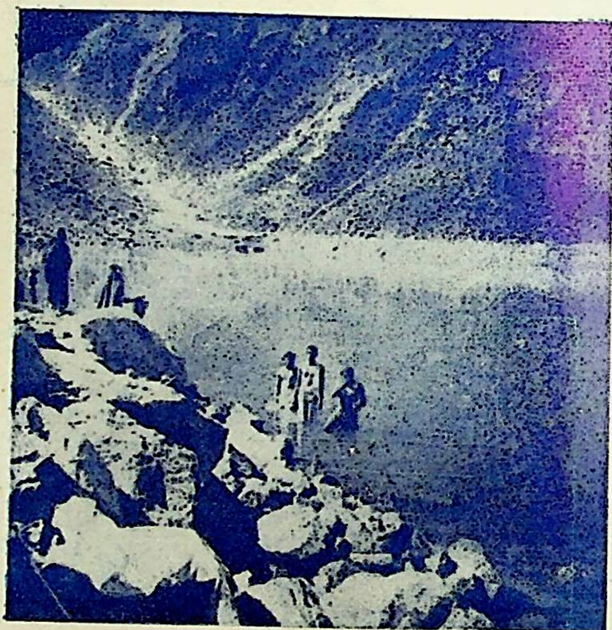
यह है मार्ग में दर्शनीय प्रपात



हेमकुण्ड लोकपाल सरोवर



पाण्डुकेश्वर मन्दिर



सत्यपथ सरोवर और ग्लेशियर

कैलाश मानसरोवर यात्रा

इस यात्रा के जाने के लिये प्रमण्डल ने दो मार्ग निश्चित किये हैं। प्रथम मार्ग ऋषिकेश से बद्रीनाथ होकर जोशीमठ, और वहाँ से नीतिदर्रा (नीतिपास) होकर, तीर्थपुरी, कैलाशपर्वत ज्ञानिमा मण्डी, राक्षसताल, मानसरोवर, होकर, बागेश्वर अल्मोड़ा, रानीखेत रेलवे स्टेशन तक अथवा अल्मोड़ा से आरम्भ कर उल्लिखित मार्ग से जोशीमठ, बद्रीनाथ होकर वापिस ऋषिकेश या कोटद्वार रेलवे स्टेशन तक। थोलिंगमठ के लिये केवल बद्रीनाथ से माना पास होकर मार्ग निर्धारित किया गया है।

यात्रा का प्रबन्ध।

उक्त स्थलों की समस्त यात्रा प्रायः जनशून्य हिमाच्छादित पर्वतमालाओं में होते हुये लगभग २५ हज़ार फीट की ऊँचाई तक चढ़नी पड़ती है। संपूर्ण प्रवास में कहीं भी रहने के लिए घर बने हुए नहीं हैं। प्रमण्डल ने इसके लिए टेन्ट (तम्बू) की व्यवस्था की है। प्रतिदिन निर्धारित स्थान में यात्री के पहुँचने से पूर्व रहने के लिये टेन्ट तैयार लगे हुये रहेंगे। ताकि शीतप्रधान प्रदेश में यात्री को कष्ट न हो सके। इसी प्रकार भोजन के लिए सम्पूर्ण सामग्री अपने साथ होती है, यहाँ तक कि लकड़ी और कोयला अपने साथ रखा जाता है। परिवाहन (सवारी) के लिये भी प्रमण्डल ने भोटिया घोड़े और कहीं विशेष बर्फीले स्थानों के

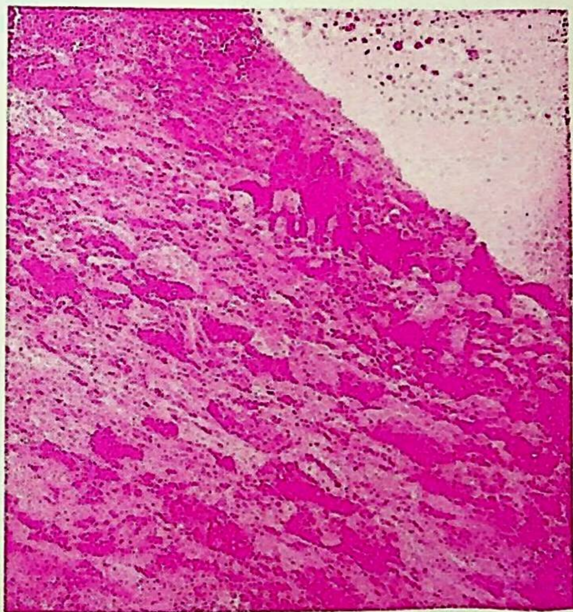
लिये स्पेशल याक (पु०चँवरगाय) का प्रबन्ध किया है तथा पर्वता-रोहण के उपयोगी अन्यान्य साधन और पासपोर्ट (पार-पत्र) की भी व्यवस्था की है।

जोशीमठ-कैलाश-मानसरोव यात्रा मार्ग वर्णन

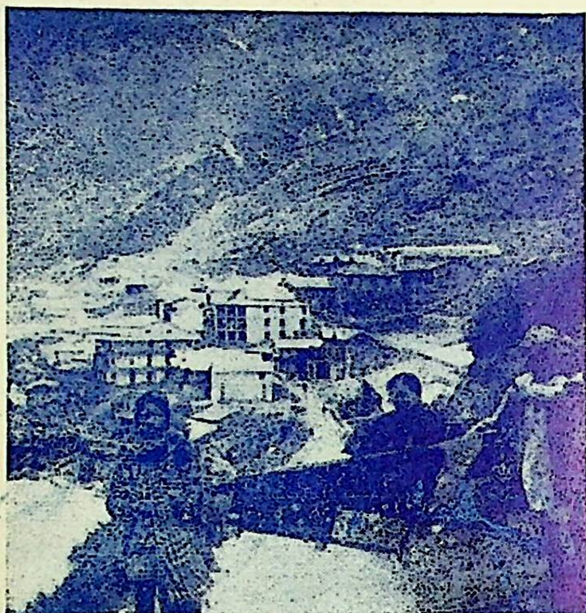
जोशीमठ से	मीलों की दूरी	
तपोवन	६	
सुराईठोटा	८	
जुम्मा	६	... द्रोणागिरी पर्वत दर्शन।
मलारी	११	
बाम्पा	१३	
नीती	३	
होती धुरा	५	
होती पड़ाव	६	... भारतीय सीमा।
ज्यूताल	१०	... टेन्ट बस्ती।
श्यूंगुल	११	... सतलज नदी।
अलंगतारा	७	
गोजीमरू	६	
देंगों	११	.... यहाँ तक घोड़ा सवारी आगे याक सवारी।
गुरझाँम (मिशर)	१०	... टेन्ट बस्ती।
तीर्थपुरी	६	... तप्तकुण्ड-टेन्ट बस्ती



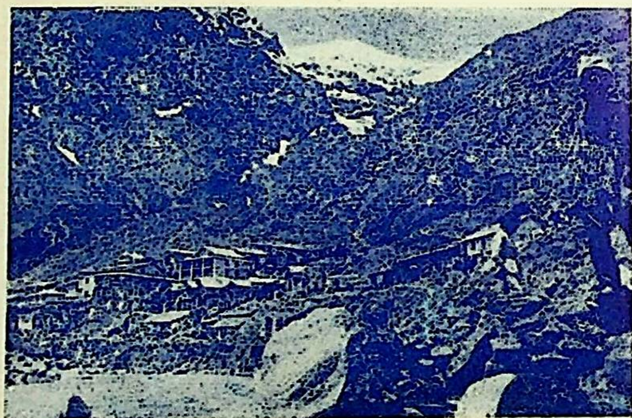
मानसरोवर का रम्य दृश्य



कैलाश जाते हुये प्राकृतिक पथ



सूखाबह-डंडी सवारी और पुरी बद्रीनाथ



श्री बदरीनाथ पुरी का विहंगम दृश्य

दुञ्चू	१५	
सालचक	१२	
दरचिन	१४	··· मण्डी-टेन्ट बस्ती।

यहाँ से कैलाश परिक्रमा आरम्भ होती है। दरचिन से लेकर वापिस फिर दरचिन २६ मील है और ४ मन्दिर इस परिक्रमा में मिलते हैं। पहिला मन्दिर दरचिन से ५ मील नान्दी गुम्पा, दूसरा मन्दिर ढेरपु गुम्पा ८ मील, गौरीकुण्ड सरोवर है। ६ मील तीसरा मन्दिर ५ मील जुन्थुल गुम्बा, चौथा मन्दिर झाग्टा है।

दरचिन से	मीलों की दूरी	
बरखा	६	
मानसरोवर	१०	··· मानसरोवर की परिक्रमा ८० मील है, प्रायः १० दिन का प्रवास है, ८ मन्दिर परिक्रमा में मिलते हैं। छटा मन्दिर, ठोकरमण्डी में है यहाँ पर दारमा व्यास और नैपाल की व्यापारिक मण्डी है।
ज्ञानिमा मण्डी	३०	··· यहाँ तक याक द्वारा परिवाहन आगे फिर घोड़ा, खिच्चर का प्रबन्ध।

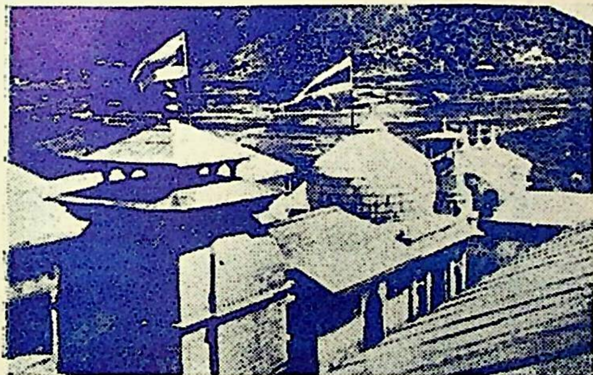
ठाजांग	१२	
छिरचुन	१५	···· यह जुहार पास है।
दुंग	१०	
मिलंम	१०	
बोगडार	१२	
मुनस्यारी	१२	
गिरगाँव	६	
तेजम	७	
सामा	६	
फरकोट	८	
बाकेश्वर	१४	यहाँ से मोटर मार्ग प्रारम्भ।
काठ गोदाम		··· रेलवे स्टेशन।

कैलाश मानसरोवर की पैदल यात्रा में मुख्य स्थानों की परस्पर दूरी, कुल मार्ग ५०२ मील पैदल—ऋषिकेश से मोटर द्वारा देवप्रयाग, श्रीनगर होकर पीपलकोटी तक और पीपलकोटी से पैदल जोशीमठ, नीती और धुरा होकर कैलाश-मानसरोवर होते हुये बागेश्वर (अल्मोड़ा) तक।

जोशीमठ से	मीलों की दूरी	
नीती	५३	
कैलाश	१५६	
कैलाश परिक्रमा	२६	
मानसरोवर	१६	
बागेश्वर	१४५	···· मोटर स्टेशन



श्री बदरीनाथ मन्दिर का सिंहद्वार



श्री बदरीनाथ मन्दिर

मुख्य स्थानों के समीप से दर्शनीय स्थान

श्रीबद्रीनाथ के समीपः—

सुनारसूलीपर्वत, नीलकण्ठपर्वत, चौखम्बापर्वत, नारायण-पर्वत, नरपर्वत, अलकापुरी ग्लेशियर, कुबेर ग्लेशियर, सत्यपथ, स्वर्गारोहण ग्लेशियर, महापथ ग्लेशियर, चन्द्रकुण्ड, सूर्यकुण्ड, सत्यपथ सरोवर, लक्ष्मीवन, चक्रतीर्थ, बसुधारा, केशव प्रयाग, मुचकन्द गुफा, गणेश गुफा, कल्प ग्राम, मणिभद्र पुरी, सरस्वती प्रपात एवं अन्यान्य दर्शनीय सुरम्य स्थल।

इन उक्तस्थलों में जाने के लिए विशेषतया सड़क नहीं है, केवल लक्ष्य से जाना पड़ता है। रहने के लिये तथा भोजन के लिये भी समस्त सामग्री अपने साथ में रखनी पड़ती है। प्रमण्डल ने ऐसे रहस्यमय स्थानों में जाने के लिये वैज्ञानिक और शास्त्रीय शोधकों को विशेष सुविधायें देने का प्रबन्ध किया है।

पाण्डुकेश्वर के समीप से:–

लोकपाल, हेमकुण्ड, काकभुसुण्डी क्षेत्र, वैली ऑफ फ्लावर्स (जगद्विख्यात प्राकृतिक पुष्प वाटिका) यहाँ जाने के लिए भी उक्त साधनों की आवश्यकता होती है। जिसके लिये प्रमण्डल व्यवस्था करेगा।

मण्डलचट्टी के समीप से:–

अनसूया मठ, अत्रि आश्रम, दत्तात्रयाश्रम, अमृतकुण्ड आदि अनेक रहस्यमय ऐतिहासिक स्थान। यहाँ के लिये भी उक्त स्थलों की तरह व्यवस्था की जाती है।

कुमारचट्टी के समीप से:-

कल्पेश्वर, उगम, ध्यान बदरी, वंशीनारायण, रुद्रनाथ, प्रभृति विचित्रस्थानों के लिए भी उपरोक्त व्यवस्था।

उषीमठ तथा नालाचट्टी के समीप से:-

महिषमर्दिनी, कालीमठ, मदमहेश्वर, महान चमत्कारिक स्थान, मार्ग और व्यवस्था पूर्ववत।

प्रत्येक दर्शनीय स्थान एवं तीर्थ में शास्त्रीय गवेषणापूर्ण पद्धति के अनुसार धार्मिक कृत्यों की व्यवस्था यात्री की इच्छानुसार होती है।

पैदल अथवा सवारी वाले यात्री की समायानुकूल प्रतिदिन मार्ग चलने की उचित व्यवस्था प्रमण्डल का मैनेजर, जो संग होगा, वह करेगा।

हर निवास में दोनों समय चाय, भोजन और स्नान की व्यवस्था होगी। साथ ही प्रति चौथे या पाँचवें दिन विशेष भोजन की व्यवस्था समयानुकूल होगी। भोजन का प्रबन्ध सम्मिलित होगा। यदि कोई यात्री सहभोज में शामिल न होकर अपनी भोजन व्यवस्था स्वतः अपने हाथ से करके खाना चाहे तो उसका प्रबन्ध भी किया जावेगा। किन्तु इसके लिये यात्री को अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा या अपने प्रस्थानकाल से पूर्व प्रमण्डल से निश्चय कर लिया जाना चाहिये।

मुख्य-मुख्य स्थानों की परस्पर दूरी

देवप्रयाग से पौड़ी		१८ मील पैदल	
श्रीनगर ,, ,,		८ ,, ,, और मोटर द्वारा २२ मील	
पौड़ी ,, दुगड्डा	४०		मोटर मार्ग
दुगड्डा ,, लैन्सडौन	२०		मोटर मार्ग
लैन्सडौन ,, कोटद्वारा	३४		मोटर मार्ग
हृषीकेश से देवप्रयाग	४३		मोटर मार्ग
,, सें श्रीनगर	६६		मोटर मार्ग
,, से रुद्रप्रयाग	८६		मोटर मार्ग
रुद्रप्रयाग से गुप्तकाशी	२४		पैदल मार्ग
,, ,, त्रियुगीनारायण			पैदल मार्ग
,, ,, केदारनाथ	४८		पैदल मार्ग
केदारनाथ से ऊखीमठ	२७		पैदल मार्ग
,, ,, तुंगनाथ	४२		पैदल मार्ग
,, ,, चमोली	५४		पैदल मार्ग
देवप्रयाग से श्रीनगर	१८		मोटर मार्ग
,, ,, रुद्रप्रयाग	३६		मोटर मार्ग
,, ,, कर्णप्रयाग	५६		मोटर मार्ग
,, ,, नन्दप्रयाग	६६		मोटर मार्ग
,, ,, चमोली	७३		मोटर मार्ग
,, ,, पीपलकोटी	८३		मोटर मार्ग

पीपलकोटी से जोशीमठ		२०	पैदल मार्ग
जोशीमठ	,, पाण्डुकेश्वर	८	
पाण्डुकेश्वर	,, बद्रीनाथ	११	

पैदल मार्ग

गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ यात्रा में पैदल मार्ग कुल ४१२ मील चलने का है। जिसका विवरण निम्नप्रकार है। गंगोत्री मार्ग में धरासू तक ही मोटर जाती है।

धरासू से पैदल—	*मीलों की दूरी*
यमुनोत्री	४८
यमुनोत्री से गंगोत्री	६६
गंगोंत्री से केदारनाथ	१२१
केदारनाथ से बद्रीनाथ	१०६
बद्रीनाथ से वापिस पीपलकोटी मोटरस्टैन्ड	३८

केदारनाथ बद्रीनाथ यात्रा में केवल १९२ मील पैदल चलना पड़ता है। जिसका विवरण निम्नप्रकार है। ऋषिकेश से देवप्रयाग-श्रीनगर होकर ८२ मील रुद्रप्रयाग तक मोटरमार्ग है और इसके बाद पैदल यात्रा आरंभ होती है।

रुद्रप्रयाग से—	*मीलों की दूरी*
केदारनाथ	४८
केदारनाथ से बद्रीनाथ	१०६
बद्रीनाथ से वापिस पीपलकोटी मोटरस्टैन्ड	३८

पीपलकोटी से बद्रीनाथ ३८ मील—बद्रीनाथ यात्रा में केवल ७६ मील ही पैदल चलना पड़ता है। ऋषीकेश से देवप्रयाग, श्रीनगर होकर पीपलकोटी तक मोटर है और पीपलकोटी से ३८ मील बद्रीनाथ है।

व्यवस्था के विभिन्न अंग

(१) यात्री के घर से ही वापिस घर तक सारी व्यवस्था जिसमें नियोजित होंगी। सम्मिलित अथवा स्वतन्त्र।

(२) कार्यालय के निर्धारित स्थान से नियत समय में शामिल होकर निश्चित संख्या के साथ अथवा स्वतन्त्र। अथवा कार्यालय के द्वारा स्वतन्त्र व्यवस्था। जिसमें यात्रियों की निश्चित संख्या के प्रतिबन्ध से बाध्य न होना पड़े।

(३) शाखा कार्यालय या स्वतन्त्र रीति से प्रधान कार्यालय तक पहुँचने की व्यवस्था। समिति द्वारा अथवा स्वतन्त्र। प्रधान कार्यालय या शाखा-कार्यालय से भेजी हुई मण्डली के अतिरिक्त स्वतन्त्र यात्री की व्यवस्था।

(४) ऋषिकेश से आगे की व्यवस्था सम्मिलित या स्वतन्त्र।

(५) केवल कुली या परिवाहन व्यवस्था।

(६) केवल भोजन व्यवस्था जिस में कुली, वाहन शामिल न हों। केवल पथप्रदर्शकीय व्यवस्था जिसमें, भोजन, कुली, की जुम्मेवरी न हो इसमें निवास स्थान का केवल प्रबन्ध होगा।

(७) संपूर्ण व्यवस्था:—भोजन, स्थान, कुली, डंडी, कंडी, स्पेशल मोटर दर्शन एवं अन्यान्य समयानुकूल प्रवन्ध।

शाखा कार्यालय और प्रधान कार्यालय

प्रधान कार्यालय से ही सम्पूर्ण प्रस्थान की तिथि निर्धारण एवं प्रोग्राम (कार्यक्रम) का निश्चय होता है। इसकी सूचना शाखा कार्यालय या प्रत्येक इच्छुक यात्री को समय-समय पर अध्ययन और मनन के लिए भेजी जाती है। समय और परिस्थिति के अनुसार यात्रा आरम्भ तिथि निर्धारित होने पर भी परिवर्तन हो सकती है। जिसकी सूचना १५ दिन पूर्व प्रत्येक शाखा कार्यालय या तत्संबन्धित स्वतन्त्र व्यक्ति को दी जाती है। प्रधान कार्यालय के निश्चयानुसार किसी भी प्रान्तीय शाखा से स्पेशल रेल्वे का प्रबन्ध होता है। इसकी सूचना विज्ञप्ति द्वारा दी जाती है।

यात्री को चाहिए कि वह कम-से-कम २० दिन पूर्व कार्यालय को सूचित कर अपनी व्यवस्था सम्बन्धी अभिरुचि प्रकट कर दें। साथ ही शाखा कार्यालय १ या इससे अधिक सीटें भी बुक करके प्रधान कार्यालय को भेज देगा। प्रधान कार्यालय अपने निर्धारित समय पर उसकी स्वतन्त्र या सम्मिलित व्यवस्था कर देगा जिसका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रमण्डल पर रहेगा।

प्रधान कार्यालय से आरम्भ की हुई यात्रा में कम-से-कम ४० और अधिक शे अधिक २५० यात्री तक एक साथ चलेंगे।

प्रधान कार्यालय की अनुमति से १ या इससे अधिक व्यक्ति की व्यवस्था हो सकती है।

शाखा कार्यालय

उत्तराखण्ड हिमालय यात्रा करने वाले महानुभावों की सुविधा के लिये प्रमण्डल की ओर से निम्नप्रकार भारतवर्ष के कुछ मुख्य-मुख्य नगरों में शाखा कार्यालय खोले गये हैं और उनके साथ ही भविष्य में भारतवर्ष के प्रत्येक नगर में भी कार्यालय खोलने का निश्चय है। जिससे हिमालय के भूस्वर्ग उत्तराखण्ड के दर्शनार्थी यात्री को सुगमता से यहां के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके और प्रमण्डल की सेवाओं द्वारा लाभ हो सके। वर्तमान शाखा कार्यालय निम्न स्थानों में हैं:-

मद्रासः—(१) यम० एस० नगराज,पाण्डुरंग, मन्दिर, मद्रास-४।
(२) श्री के० यस० रामानुजम 'अरुणोध्याम' २२, एडवर्ड इलीओट्स रोड मैलापुर, मद्रास।

अहमदनगरः—(१) ढोन्डीराम पाटिल, साहेगाँव, पो० मूंगी, (अहमदनगर)
(२) श्री गोपाल रामभाऊ सुनार, सरजीपुरा वेलदार कारंजा ५४/६ अहमदनगर।

कोलापुरः—श्री शंकर सखाराम सुगंधी बैंकर्स, लक्ष्मी बैंक के पास, लक्ष्मीरोड, कोलापुर।

सताराः—श्री पालकर ब्रदर्स, सतारा।

बेलगाँवः—श्री यच० एन० देशपाण्डेय, नवग्रह वाटिका के समीप बेलगाँव।

औरंगाबाद:-(१) श्री यशवन्त श्रीपाद राहतेकर, हथनूर, औरंगाबाद।

(२) श्री भाऊनारायण सर्राफ पैठण,औरंगाबाद,१।

पूना:—(१) श्री डा० जी० डी० आप्टे, एम० बी० बी० यस०, ७८६ सदाशिवपेठ, पूना २।

(३) श्री यम० पी० जोशी, एल० सी० पी० यस०, ६१२ लक्ष्मी रोड, पूना।

नासिक:—(१) श्री गणेश हरि पेठे; पेठे बिल्डिंग, नासिक।

(२) श्री गणेश महादेव उपाध्ये, ओझर, नासिक।

बंबई:—(१) खार, बंबई १२।

(२) खीम जी जीवा सेनीटोरियम ब्लौक नं० ७, वालकेश्वर रोड, बंबई।

कल्याण:—श्री यल० बी० फड़के, ऐडह्वोकेट, बाजार पेठ, कल्याण (बंबई)।

अहमदाबाद:—श्री रामलाल गनपत, हनुमान मन्दिर, शाहीबाग रोड, अहमदाबाद।

नागपुर:—(१) श्री बाबा जी डोके, ६/१४ इतवारी, नागपुर।

(२) बी० जे० बूटी, सिविल लाइन बंगला, नागपुर।

गोंदिया:—बजाज केमिकल इन्डस्ट्रीज, गोंदिया।

अमरावती:-श्री रामगोपाल सर्राफ, सराफा बाज़ार, अमरावती।

रायपुर:-श्री हजारीलाल रामनारायण जी, शक्ति बाज़ार, रायपुर।

अलाहाबाद:-यस० एन० शर्मा, १५३ करनलगंज, अलाहाबाद।

कानपुरः—श्री कैलाशभट्ट c/o शंभूनाथ गुप्ता, बरफ वाले, सिरकी मुहाल, कानपुर।

इन्दौरः—श्री ओ० आर० बावुलकर, अम्बा विजय स्टोर, नसीया रोड, इन्दौर।

लखनऊः—(१) आचार्य जे० सी० भारतीय, नरई, हजरतगंज, लखनऊ।

(२) यस० यस० दीक्षित, नरई, हजरतगंज, लखनऊ।

कलकत्ताः—श्री जे० यस० कर्नानी स्टेट, कलकत्ता।

देहलीः—(१) श्री रामकृष्ण सोमाणी, सोमाणी भवन, बाजार सीताराम. देहली।

(२) श्री बदरीप्रसाद शर्मा, राजाराम जानकीदास की बगीची, जमुना किनारा, देहली।

स्मरण रहे कि निश्चित् प्रस्थान कार्यक्रम का निश्चय प्रधान कार्यालय ऋषीकेश से ही होता है। जिसकी सूचना हर शाखा कार्यालय को समय-समय पर भेजी जाती है। अथवा व्यक्तिगत पत्र व्यवहार द्वारा श्री प्रमण्डल के प्रधान कार्यालय से उक्त संबन्ध में जानकारी प्राप्त हो सकती है।

रिज़र्वेशन

प्रमण्डल प्रत्येक यात्री को, स्थान सुरक्षित कराने प्राथमिकता देता है। जिसके लिए कम-से-कम २५) रु० (पच्चीस रुपया) एडवान्स भेजना पड़ेगा। और प्रस्थान समय पर

उन्हें अपना प्रमाण-पत्र और रसीद भी साथ में रखनी होगी। उसमें व्यवस्था का भी विवरण स्पष्ट अंकित होगा।

इन्श्योरेन्स (बीमा)

आकस्मिक घटना के लिये प्रत्येक यात्री का प्रमण्डल द्वारा २ माह का बीमा किया जाता है जिसके लिये अतिरिक्त शुल्क देना पड़ता है।

सन् १९५३ की वार्षिक रिपोर्ट

सन् १९५३ के कार्य-क्रम निर्धारित करते हुए हमें प्रमंडल की ओर से आपकी सेवा में पिछले वर्ष (१९५३) के कार्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुये प्रसन्नता और गौरव हो रहा है। प्रत्येक पर्यटक, (टूरिस्ट) अन्वेपक, पर्यवेक्षक, आध्यात्मिक, एवं धार्मिक जिज्ञासु महानुभाव से प्रमंडल की ओर से निवेदन करते हैं कि संपूर्ण उत्तराखंड, कैलाश, हिमालय जाते समय प्रमंडल को सेवा करने का अवसर दें और अपनी यात्रा सुखमय सम्पन्न करें। प्रमंडल का एक मात्र ऊद्देश्य है कि; उत्तराखण्ड हिमालय के किसी भी भाग में जाने वालों की सेवा और वहां का दिग्दर्शन कराना। इसी हेतु प्रमंडल ने यात्रियों की मार्गोपयोगी सुविधा के लिये अपने कार्यालय में आवश्यक वस्तुयें नक्शा, गाइड बुक आदि संग्रह कर कार्यकर्त्ता नियुक्त किये हैं। हमारे कर्मचारी यात्रियों को सदैव उत्तराखण्ड के मार्ग

और स्थानों का सही बोध करा कर अपनी सम्मति देकर पूर्णरूप से सर्वथा सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। यात्री को चाहिये कि एकबार प्रमंडल कार्यालय में अवश्य आकर उत्तराखण्ड हिमालय के विषय में जानकारी प्राप्त कर लें। हमारा प्रमंडल समस्त भारतवर्ष में प्रथम श्रेणी का है और अभी तक इस के समान कार्य करने की क्षमता किसी में नहीं, ऐसा हमारा अनुभव है।

पार्टियों का संक्षिप्त विवरण

सन् १९५३ में प्रमंडल ने निम्न प्रकार पार्टियों की सेवा द्वारा उत्तराखण्ड हिमालय के विभिन्न भागों की सुखमय यात्रा सुसम्पन्न कराई। पार्टी प्रमुख का नामोल्लेख और गन्तव्य स्थानों की सूची निम्न प्रकार है:—

१—पार्टी श्री नारायण भगवान् आकोला निवासी, केवल बद्रीनाथ और वापिस ऋषीकेश।

२—पार्टी श्री डी० डी० कर्वे डाक्टर; प्रिंसिपिल फरग्युसन कालेज पूना बद्रीनाथ-केदारनाथ यात्रा।

३—पार्टी श्री मोहनलाल बड़ोदा निवासी केवल बद्रीनाथ यात्रा।

४—पार्टी श्री पी० आर० राज गोपाल अय्यर मद्रास निवासी केदारनाथ बद्रीनाथ यात्रा।

५—पार्टी श्री के० यस० रामानुजम मद्रास निवासी बद्रीनाथ यात्रा।

६—पार्टी श्री हाटकेश्वर नगर कलकत्ता निवासी केदारनाथ बद्रीनाथ यात्रा।

७—पार्टी श्री यन बाल सुन्दरम् मद्रास निवासी, हाल निवास देहली बद्रीनाथ केदारनाथ यात्रा।

८— पार्टी श्रीमती हंसराज गुप्ता देहली निवासी बद्रीनाथ यात्रा।

९—पार्टी श्री के० गोपालन प्रोप्राइटर 'हिन्दू' समाचार पत्र मद्रास पार्टी केवल बद्रीनाथ यात्रा।

१०—पार्टी कर्नल यम० आर० राजवाड़े श्री मेजर आर. जी. अड मिलिट्री एकेडेमी पार्टी देहरादून को वैली आफ फ्लावर्स (जगद्विख्यात पुष्प घाटी) लोकपाल, हेमकुन्ड आदि हिमालय की रम्य चोटियों की यात्रा कराई।

११—श्री जयसिंह कर्नानी स्टेट कलकत्ता पार्टी बद्रीनाथ यात्रा।

१२—श्री यस. वी. रामनाथन मद्रास हाल निवास देहली पार्टी केवल बद्रीनाथ यात्रा।

१३ श्रीमती स्वामी मद्रास हाल निवास नई देहली पार्टी को बद्रीनाथ यात्रा।

१४—श्री यस. वेंकटरंगम हैदराबाद पार्टी बद्रीनाथ यात्रा।

१५—श्री के० श्रीनिवासन चीफ ऐडिटर 'हिन्दू' मद्रास पार्टी बद्रीनाथ यात्रा।

स्थानाभाव के कारण पार्टी प्रमुख का ही नामोल्लेख किया गया है, इस के लिये क्षमा याचना।

कतिपय महानुभाव जो निश्चित प्रोग्राम के अनुसार निर्धारित समय पर नहीं पहुँच सके, उनकी रिज़र्वेशन फ़ीस हमने १९५४ के लिये जमा करदी है। भविष्य में हमारे सूचना विज्ञापन को प्रत्येक महानुभाव ध्यान से पढ़कर तिथि नोट करने की कृपा करेंगे। ताकि उन्हें निश्चित् कार्य-क्रम के अनुसार पार्टी में सम्मिलित किया जा सके। स्पेशल पार्टी में कम से कम १० और अधिक से अधिक २० आदमियों की व्यवस्था की गई है। जिन महाशयों का रिज़र्वेशन शुल्क जमा है उन्हें प्रमण्डल की रसीद प्रस्तुत कर के प्रस्थान समय में अपने देय द्रव्य में जमा कराना होगा। किन्तु रसीद का होना आवश्यक है।

निरीक्षण

प्रमण्डल की कार्य प्रणाली का निरीक्षण पिछले साल १९५३ में कई प्रमुख व्यक्तियों ने किया। तथा उत्तरा खण्डीय-यात्रा-मार्ग में भी अनेक महानुभावोंने प्रमंडल के कार्यकी मुक्तकन्ठ से प्रशंसायें की हैं। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों का नामोल्लेख निम्न प्रकार है:—सर्व श्री भक्तदर्शन एम. पी., बल्देव सिंह आर्य पार्लामेंट्री सेक्रेटरी उत्तर प्रदेश लखनऊ। भगवतीचरण शर्मा प्रधान जिला काँग्रेस कमेटी गढ़वाल, रामचन्द्र उनियाल प्र० जि० कां० क० टेहरी, डाक्टर. के. एन. गैरोला लखनऊ, पुरुषोत्तम बगवाड़ी बी. ए. यल. यल. बी. सेक्रेटरी मन्दिर बद्रीनाथ कमेटी केप्टेन के. रामानुजम् मैलापुर मद्रास, कन्हैयालाल बजाज गोंदिया (मालिक बजाज केमिकल इन्डस्ट्रीज गोंदिया), मनोहर लाल साह बागेश्वर

अल्मोड़ा चन्द्रभानु गुप्ता देहरादून, यन. यस. सिन्हा मुजफरपुर, वी. पी. शर्मा गया, महाराना कौलोनल वीरभद्रसिंह वंबई, लाल भाई पटेल नड़ियाद, महँगाराम गुरुमुख सिंह मोघा फिरोजपुर, ज्ञानानन्द पुरी रामकृष्ण मिशन कनखल, श्रीहंसराज कुन्दरा प्रिन्सिपल बलिया, यस. वी. सक्सेना लेक्चरार सागर विश्वविद्यालय।

स्थलों के नाम		समुद्रतल से ऊँचाई
श्री कैलाश	तलप्रदेश	२२०२६
कंचनजंघा	चोटी	२८१६८
केदारनाथ	चोटी	२२७७०, तलप्रदेश. ११७६० ११५८०.
कालीमठ		७३११
कल्पेश्वर	तलप्रदेश	६६३० श्रेणी. १०१६०
गौरीशंकर		२३४४०
गंगोत्री		१२०००
गोमुख	तलप्रदेश	१२७७०
गुप्तकाशी	,,	८०००
		I II III IV
चौखम्बा		२२४८५-२२८८०-२३१९०-२३४२०
जमुनोत्री	तलप्रदेश	११९९०
जोशीमठ	,,	६०००
तीर्थपुरी	,,	२००००

स्थलों के नाम		समुद्रतल से ऊँचाई		
तुंगनाथ		१४७५०		
त्रियुगीनारायण		७०७०		
देहरादून		२३३२		
देवप्रयाग	तलप्रदेश	१६५०	चोटी	४५८०
धौलागिरी		१५८९०		
नन्दादेवी		२५६४५	श्रेणी	
नीती पास		१६७५०		
नीति		१२०००,		
नारायण पर्वत	तलप्रदेश	१६९३०	श्रेणी	१९५७०
नालीकंठ		२१६४०	,,	
बद्रीनाथ		१०४८०	,,	१९५७०
वसुधारा	,,	१५१२० (फाल ४०० फी०)		
वंशीनारायण	,,	७०००	श्रेणी	११९४०
वासुकीताल	,,	१५०१०		
रुद्रमहेश्वर ११७७०-१४२२४				
मानापासा		१६४५०—१८८९०		
मानागांव	तलप्रदेश	,, १०२९०		
मौन्ट एवरिस्ट		२९००२	,,	
मानसरोवर	तलप्रदेश	,, १४९९०	श्रेणी	१५०००
राक्षसताल १६४००		१४३४९		१७०००

स्थलों के नाम		समुद्रतल से ऊँचाई
ऋषीगंगा	,,	१४६५०
रुद्रनाथ	,,	११६७० १६३२०
लैन्सडौन		५८२३
सत्यपथ		(ताल) १४६५०—श्रेणी २३२१३ - २१८७०
श्वेतपर्वत		१६०७०
हनुमान पर्वत		१७४४०
हाथी पर्वत		२२१४१



मार्गोपयोगी सामान

१ होल्डोल या दरी, २ कम्बल ऊनी, १ गद्दा २ सेर रुई का, २ चादर सूती, १ गरम सूट, ४ कमीज सूती ३ धोती या पायजामा, १ जोड़ा गरम मौजा १ मफलर या गरम टोपी, १ जोड़ा केनवास बूट, १ ओवरकोट या गरम शाल, १ वाटरवैग छोटा, २ सेर ड्राइनट्स, २ सेर मिश्री, ½ सेर काली मिर्च, १ हैंन्डन्टिक (लाठी), १ छाता, १ बरसाती।

उपरोक्त सामान २० सेर तक संपूर्ण यात्रा में फ्री जायेगा।



तिब्बत निवासी

श्री बदरीनाथपुरी में—पर्यटकों को:—

तिब्बत-भूटान एजेन्सी द्वारा प्रस्तुत सामान "महावीर कार्यालय" में ही सुलभ होगा। सौ साल से इस कार्यालय ने अपनी सेवाओं से जनता का विश्वास प्राप्त किया है।

'भूटानी कस्तूरी'

१—संसार प्रसिद्ध भूटानी मृगनाभि की कस्तूरी असलियत की शर्त के साथ।

उत्तम केशर–जाफ़रान

२—काश्मीरी जाफ़रान केशर से उत्तम, असली और सस्ती।

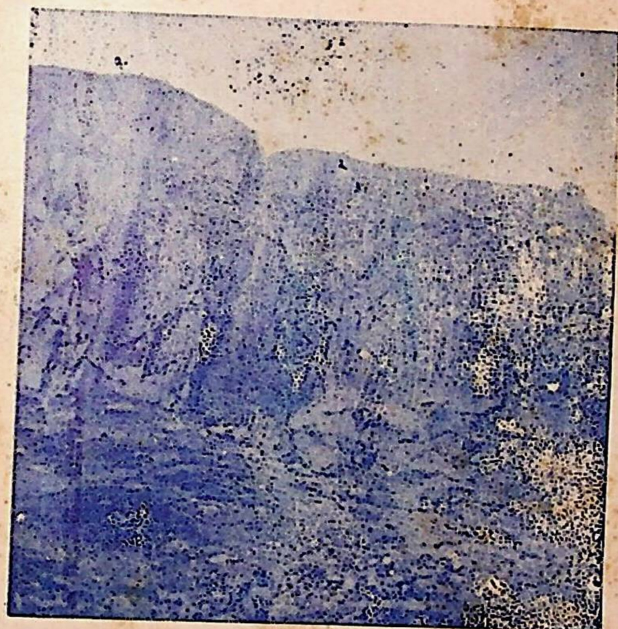
विज्ञान प्रेस, ऋषिकेश

पवित्र तीर्थयात्रा क्यों ?

—:अध्यात्मिक दार्शनिक तत्ववेत्ता महापुरुषों के दर्शन द्वारा:—

ज्ञान प्राप्ति के लिये

अनेक रहस्यमय चमत्कारपूर्ण दृश्य, द्वारा :—
साहित्यिक, पौराणिक, ऐतिहासिक शोध के लिये, निर्जनप्राय: हिमाच्छन्न प्रकृतिप्रदत्त सृष्टिसौंदर्य सुसज्जित, बहुरङ्ग विकशित-कुशुम शोभित, अगणित मनोहर पर्वतश्रेणियों में मेघमाला-मन्डित मनोरम दृश्य द्वारा मन, शान्ति और स्वाथ्स्य-लाभ के लिये "एक मात्र उत्तराखण्ड कैलाश यात्रा"



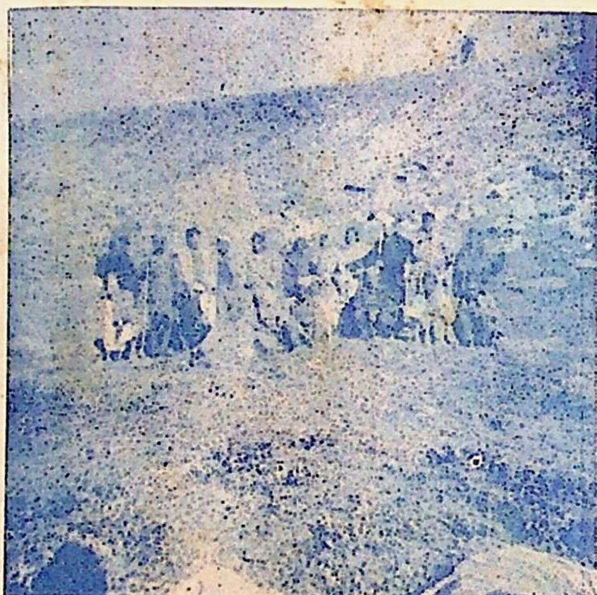
५५० फीट ऊँचा प्रपात

"यात्रा का प्रयाणसमय"।

प्रथम प्रस्थान :—१५ अप्रैल से २५ जुलाई तक। इस बीच प्रधान कार्यालय किसी भी तिथी का निश्चय करेगा।

द्वितीय प्रस्थान :—१ सितम्बर से ३० सितम्बर तक किसी भी दिन का निश्चय प्रधान कार्यालय से होगा। जिसकी सूचना प्रत्येक शाखा कार्यालय या स्वतन्त्र यात्रियों को दी जायेगी।

उत्तराखण्ड जाते हुये यात्रीगण



पुस्तक-प्राप्तिस्थानः श्री उत्तराखण्ड कैलाश यात्रा प्रमण्डल
पो० ऋषीकेश (वाया हरिद्वार)

विज्ञान प्रेस, ऋषिकेश। (देहरादून) उ० प्र०